ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL
वर्ष : 10, अंक 37, जनवरी-मार्च 2023

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

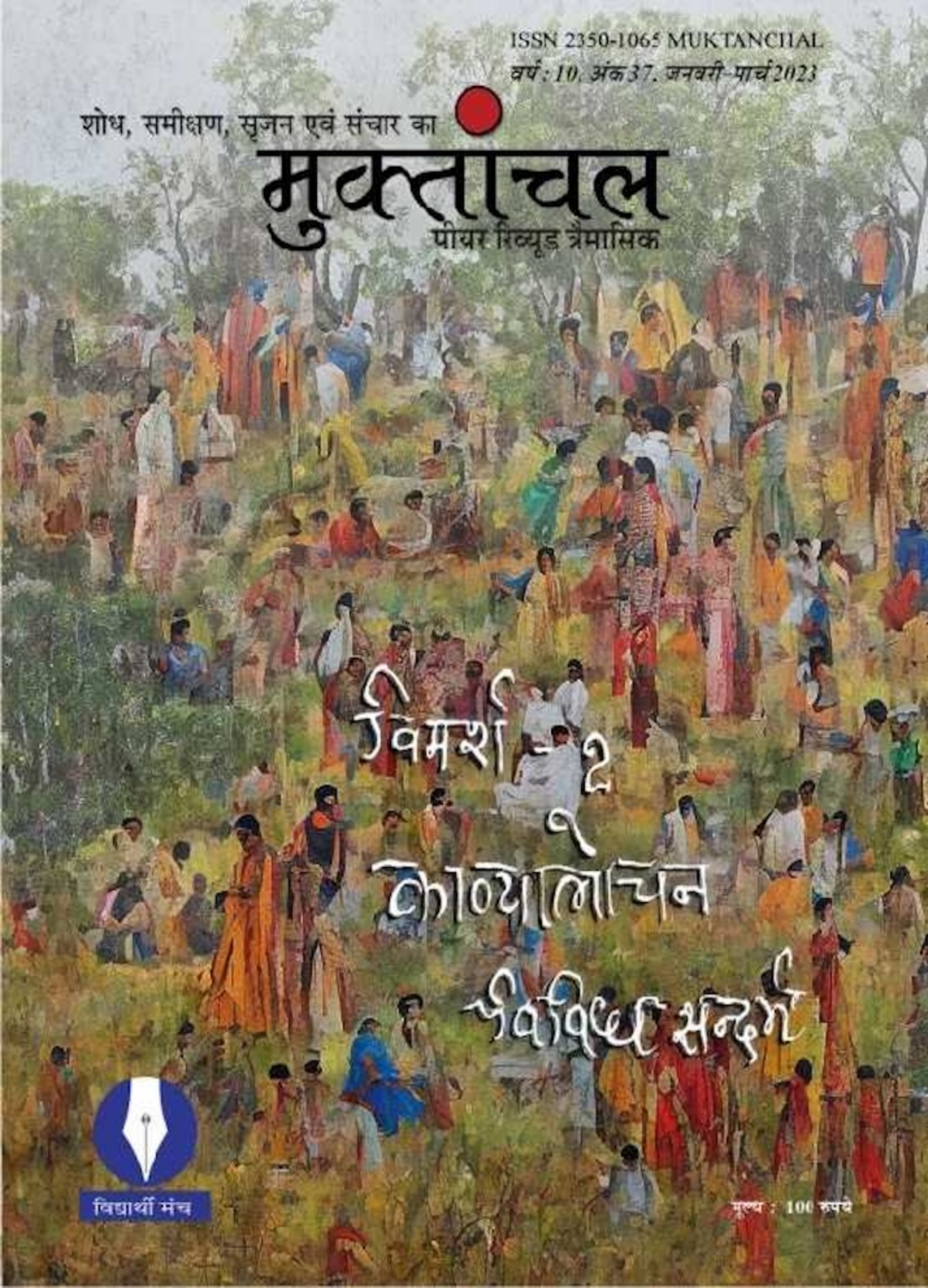

उस पार से.....

टूटी हुई, बिखरी हुई

शमशेर बहादुर सिंह
(13 जनवरी 1911-12 मई 1993)

टूटी हुई बिखरी हुई चाय
की दली हुई पाँव के नीचे
पत्तियाँ
मेरी कविता
बाल, झड़े हुए, मैल से रूखे, गिरे हुए, गर्दन से फिर भी चिपके
.....कुछ ऐसी मेरी खाल,
मुझसे अलग-सी, मिट्टी में
मिली-सी

दोपहर-बाद की धूप-छाँह में खड़ी इंतजार की ठेलेगाड़ियाँ
जैसे मेरी पसलियाँ....
खाली बोरे सूर्जों से रफू किए जा रहे हैं....जो
मेरी आँखों का सूनापन हैं

ठंड भी एक मुस्कराहट लिए हुए है
जो कि मेरी दोस्त है।

कबूतरों ने एक गजल गुनगुनाई....
मैं समझ न सका, रदीफ-काफिए क्या थे,
इतना खफीफ, इतना हलका, इतना मीठा
उनका दर्द था।

आसमान में गंगा की रेत आईने की तरह हिल रही है।
मैं उसी में कीचड़ की तरह सो रहा हूँ
और चमक रहा हूँ कहीं.....
न जाने कहाँ।

मेरी बाँसुरी है एक नाव की पतवार
जिसके स्वर गीले हो गए हैं,
छप-छप-छप मेरा हृदय कर रहा हैं....
छप छप छप।

वह पैदा हुआ है जो मेरी मृत्यु को सँवारनेवाला है।

मुझको वह दूकान मैंने खोली है जहाँ 'प्वाइजन' का
लेबुल लिए हुए
दवाइयाँ हँसती हैं-
उनके इंजेक्शन की चिकोटियों में बड़ा प्रेम है।
वह मुझ पर हँस रही है, जो मेरे होंठों पर एक तलुए
के बल खड़ी है
मगर उसके बाल मेरी पीठ के नीचे दबे हुए हैं
और मेरी पीठ को समय के बारीक तारों की तरह
खुरच रहे हैं
उसके एक चुंबन की स्पष्ट परछाईं मुहर बनकर उसके
तलुओं के ठप्पे से मेरे मुँह को कुचल चुकी है
उसका सोना मुझको पीसकर बराबर कर चुका है।
मुझको प्यास के पहाड़ों पर लिटा दो जहाँ मैं
एक झरने की तरह तड़प रहा हूँ।
मुझको सूरज की किरनों में जलने दो
ताकि उसकी आँच और लपट में तुम
फौवारे की तरह नाचो
मुझको जंगली फूलों की तरह ओस से टपकने दो,
ताकि उसकी दबी हुई खुशबू से अपने पलकों की
उनींदी जलन को तुम भिगो सको, मुमकिन है तो।
हाँ, तुम मुझसे बोलो, जैसे मेरे दरवाजे की शरमाती चूलें
सवाल करतीं हैं बार-बार...मेरे दिल के
अनगिनती करों से
हाँ, तुम मुझसे प्रेम करो जैसे मछलियाँ लहरों से करती हैं
जिनमें वह फँसने नहीं आतीं,
जैसे हवाएँ मेरे सीने से करती हैं
जिसको वह गहराई तक दबा नहीं पाती,

ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

वर्ष-10, अंक- 37, जनवरी-मार्च 2023

संपादक : **डॉ. मीरा सिन्हा**

प्रकाशक : **विद्यार्थी मंच**

प्रबंध संपादक : **सुशील कुमार पांडेय**

कला संपादक : **शुभागता श्रीवास्तव**

प्रसार प्रबंधक : **रमेश कुमार शर्मा**

प्रूफ संशोधक : **विनोद यादव**

परामर्श एवं विशेष सहयोग :

प्रो. दामोदर मिश्र : कुलपति, हिन्दी विश्वविद्यालय, हावड़ा

डॉ. पंकज साहा : खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल

डॉ. अरुण कुमार : प्राक्तन प्रोफेसर, राँची विश्वविद्यालय

डॉ. रणजीत सिन्हा : मिदनापुर कॉलेज (ऑटोनोमस), मिदनापुर

डॉ. निशांत : काजी नजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल

डॉ. कृष्ण कुमार : अध्यक्ष, गीतांजलि बहुभाषिक साहित्यिक समुदाय, (बर्मिंघम, यू.के.)

व्यवस्थापन एवं प्रबंधन :
विनोद यादव, विनीता लाल, सरिता खोवाला, परमजीत पंडित एवं बलराम साव - 89107 83904

संपर्क एवं प्रसार :
चाँदनी सिन्हा (बर्मिंघम, यू.के.) : +447411412229
कुणाल किशोर (के.वि. हिमाचल प्रदेश): 7998837003

लेखकों से अनुरोध किया जाता है कि मुक्तांचल में प्रकाशन हेतु सामग्री यूनिकोड वर्ड (Unicode Word) या (Kurtidev010) में भेजें।

पत्रिका में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं 'मुक्तांचल' से संबंधित सारे विवादों के लिए न्याय-क्षेत्र कलकत्ता उच्च न्यायालय होगा।

पीयर रिव्यूड टीम :

डॉ. धूपनाथ प्रसाद : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

डॉ. विश्वजीत भद्र : प्राध्यापक, नेताजी नगर कॉलेज (कलकत्ता विश्वविद्यालय)

प्रो. मोहम्मद फ़रियाद : प्राक्तन अध्यक्ष, जनसंचार विभाग, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

डॉ. सुनील कुमार 'सुमन': प्रभारी, क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

प्रो. मंजु रानी सिंह : विश्वभारती, शांतिनिकेतन

प्रो. अरुण होता : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्टेट यूनिवर्सिटी, बारासात

प्रो. मनीषा झा : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उत्तर-बंग विश्वविद्यालय

डॉ. सत्या उपाध्याय : प्राचार्य, कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता

डॉ. अंजनी कुमार झा : एसोसिएट प्रोफेसर, मीडिया स्टडीज, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी (बिहार)

डॉ. शुभ्रा उपाध्याय : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खुदीराम बोस सेंट्रल कॉलेज, कोलकाता

मुक्तांचल: A/c- 50200014076551, HDFC BANK BURRABAZAR, KOLKATA- 700007, IFSC CODE- HDFC0000219

संपादकीय कार्यालय :
आधुनिक अपार्टमेंट, 6/2/1 आशुतोष मुखर्जी लेन सलकिया, हावड़ा-711106, पश्चिम बंगाल
संपर्क - 033-26751686, 9831497320, 9681105070
ई-मेल - muktanchalpatrika@gmail.com
sinhameera48@gmail.com

मुद्रक : शिक्षण, 50, सीताराम घोष स्ट्रीट, कोलकाता-700009

पत्रिका का मूल्य : एक अंक - 100 रुपये

सदस्यता शुल्क : वार्षिक- 600 रुपये, आजीवन-3000 रुपये

संस्थाओं के लिए : वार्षिक-600 रुपये, आजीवन-3500 रु. डाकखर्च (प्रत्येक अंक के लिए) अतिरिक्त 30 रुपये।

अवस्थिति

शो ध स मी क्ष ण सृ ज न सं चा र

06 संस्तुति

आलेख

07 विजय बहादुर सिंह : काव्यालोचक की भूमिका

11 सेवाराम त्रिपाठी : कविता के विविध रंग और उसका आस्वाद

20 मनीषा झा : कविता में हुगली

23 डॉ० पंकज साहा : सूर्यभानु गुप्त: कवि एक रंग अनेक

अनुशीलन

26 रंजना अरगडे : शमशेर बहादुर सिंह की कविता 'टूटी हुई, बिखरी हुई' का पाठ

34 स्नेहा सिंह : श्वानों की निगाह में 'कोरोना': संदर्भ 'अल्फा–बीटा–गामा'

38 रसना मुखर्जी: नवगीत का परिप्रेक्ष्य और नवगीतकार

40 दिव्या प्रसाद : कवि की कविता : एक विचार

विमर्श

43 डॉ० के० बी० एल० पाण्डेय : छायावाद अदालत तक लगभग

संस्मृति

46 निशान्त : स्मृतियों में मैनेजर पाण्डेय

कहानी

49 सुषमा मुनीन्द्र : रूठे सजन मनाइये, जो रूठे सौ बार

60 डॉ० कविता विकास : अंतिम फैसला

63 स्वाति मिश्रा : वृंदावन

व्यंग्य

65 विनोद साव : ध्वस्त करने के विशेषज्ञ

समय की शिला पर

67 वंदना गुप्ता : अतीत से वर्तमान तक स्त्रियों की पीड़ा ही मेरी लेखनी–का उत्स है।

कविता

71 शैलेंद्र शांत : सूना कोना, भरोसे का टूटना, और बस साहब जी, अहसास, वारिस हो न हो, पिता की छाप, लाजमी।

शो ध स मी क्ष ण सृ ज न सं चा र

74 **मंजु रानी सिंह :** चुनाव, चल पेड़, सवाल, बच्चा, जीने का सबब, प्रेम, पृथ्वी दिवस, पीला पत्ता

77 **त्रिषान्निता :** दिसंबर, चित्रों का एक अल्बम, दरख़्त, भाषाएँ, ठिठकना, बागी

80 **मंजु श्रीवास्तव :** विडंबना, चिड़िया और हम, स्त्रियाँ, मुखर्जी साहब की माँ, पिता की पुरानी साइकिल

83 **श्रीप्रकाश गुप्त :** हाइकू : प्रेम, ऊर्जा

85 **शुभ्रा उपाध्याय :** काठ गोदाम के अक्स

पुस्तकायन

90 **रानी सुमिता :** 'ओलोचना के समानान्तर' स्त्री आलोचना संसार को समृद्ध करने का सार्थक प्रयास है

94 **खुदेजा खान :** पर पीड़ा की मार्मिक अभिव्यक्ति : इस बार उनके लिए

98 **डॉ० शैलेश्वर सती प्रसाद :** द्वैतात्मक यथार्थ का महाकाव्यात्मक सौन्दर्य

103 **मोहन कुमार :** हिन्दी आलोचना का आलोचनात्मक इतिहास: डॉ० अमरनाथ

106 **महेश कटारे :** 'खबरों की दुनिया में' (काव्य संग्रह) : सदानन्द सुमन

शोधार्थी की कलम से

107 **पंकज कुमार सिंह :** राष्ट्रीय–सांस्कृतिक कविता का अवदान

112 **रवि प्रकाश :** अशोक चक्रधर की कविताओं में समसामयिक समस्याओं पर व्यंग्य

साक्षात्कार

116 **हारुन रशीद :** कविता एक सफर है, भीतर का और बाहर का : सतीश विमल

गतिविधियाँ

119 **प्रिया श्रीवास्तव :** शोध–समीक्षण समिति का उद्घाटन

प्रीति कुमारी साव : मुक्तांचल पत्रिका के 36 वें अंक का लोकार्पण एवं विचार गोष्ठी का आयेजन

श्रद्धा गुप्ता 'केसरी' : प्रगति प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक का लोकार्पण

संस्तुति

काव्यालोचन केन्द्रित अंक को संपादित करते हुए कई तरह की उद्‌भावनाओं से गुजरना सार्थक रहा। पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से हम समय की नब्ज टटोल लेते हैं। पत्रिकाएँ विविध सन्दर्भों पर संवाद करती हैं। 'मुक्तांचल' का दसवाँ वर्ष कई साहित्यिक सन्दर्भों को संवाद से जोड़ने का प्रयास कर रहा है। प्रस्तुत अंक में कविता पर विविध प्रकार से विचार किया गया है। वस्तुतः, दो सदियों के आर–पार से सर्जित कविताएँ अपनी बुनावट एवं बनावट में बदलती रही है, विश्व स्तर पर छा जाने वाले तकनीकी हमलों ने कला जगत पर भी अपना विस्तृत प्रभाव छोड़ा है। कविता की दुनिया भी उससे अछूती नहीं रह पाई है। आज की कविता सिर्फ भाव संवलित न रहकर अधिक तात्त्विक होती जा रही है। कविता में भावना से विचार की तरफ संचरण ही उसकी तात्विकता को प्रमाणित करता है। कविता की विवेचना मंच पर वाचन मात्र से पूरी नहीं होती उसके लिए चाहिए विश्लेषण की कलम जिसे लेखन द्वारा ही संभव किया जा सकता है। जहाँ तक रचना के प्रसार का सवाल है आज भी पत्रिकाओं की भूमिका इस दिशा में अधिक कारगर है। जिल्द में बन्द रचनाओं की तुलना में पत्र–पत्रिकाओं द्वारा प्रसारित रचना एवं रचनाकार ज्यादा लोगों तक पहुँच सकते हैं। आज भी मुक्तिबोध की लम्बी कविता 'अंधेरे में' के बहुत सारे पाठ मिलते हैं, यह कविता 1964 में 'कल्पना' पत्रिका में पहली बार 'आशंकाओं के द्वीप अंधेरे में' अंधेरे में शीर्षक से प्रकाशित हुई थी।

इसी अंक में रंजना अरगडे जी ने शमशेर की कविता 'टूटी हुई, बिखरी हुई' का पाठ अनुशीलन किया है। परिशिष्ट में पाठकों की सुविधा के लिए सम्पूर्ण कविता भी दी गई है। सुधी पाठकों से अनुरोध है कि इस अंक में भिन्न तरह की कविताएँ अर्थात हाइकू से लेकर लम्बी कविता तक संकलित है आप उनपर अपने विश्लेषणात्मक पाठ अवश्य भेजें। शुभ्रा उपाध्याय की लम्बी कविता 'काठ गोदाम के अक्स' भी अपने पाठ की अपेक्षा रखती है।

उम्मीद है, इस अंक की सामग्री आपको अपनी प्रतिक्रिया देने के लिए प्रेरित अवश्य करेगी। अगले अंक में हम आप द्वारा प्रेषित परिचर्चा को प्राथमिकता देंगे और उन्हें संवाद से जोड़ेंगे।

अगला अंक मुक्तांचल – 38 (अप्रैल–जून 2023) लघुकथा केन्द्रित होगा, इस विशेष अंक के अतिथि सम्पादक होंगे प्रसिद्ध व्यंग्यकार एवं आलोचक डॉ० पंकज साहा। आप लघु कथा अंक के लिए सामग्री अप्रैल के अन्तिम सप्ताह तक प्रेषित कर दें। पिछली बार निशान्त द्वारा प्रेषित 'मैनेजर पाण्डेय की संस्मृति' भूल से अधूरी गई थी। इस बार भूल सुधार कर दिया गया है।

संपादक